– लेखक- वीरेन डंगवाल

– जन्म- 5 अगस्त, 1947 ई०, टिहरी गढ़वाल जिला के कीर्तिनगर में (उŸ रांचल)

– मृत्यु- 28 सितम्बर, 2015 ई०

- हमारी नींद कवि परिचय प्रमुख समकालीन कवि वीरेन डंगवाल का जन्म 5 अगस्त 1947, ई० में कीर्तिनगर, टिहरी गढ़वाल, उत्तरांचल में हुआ । मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, कानपुर, बरेली, नैनीताल में शुरुआती शिक्षा प्राप्त करने के बाद डंगवाल जी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम० ए० किया और यहीं से आधुनिक हिंदी कविता के मिथकों और प्रतीकों पर डी० लिट् की उपाधि पायी। वे 1971 ई० से बरेली कॉलेज में अध्यापन करते रहे। डंगवाल जी हिंदी और अंग्रेजी में पत्रकारिता भी करते हैं। उन्होंने इलाहाबाद से प्रकाशित अमृत प्रभात' में कुछ वर्षों तक 'घूमता आईना' शीर्षक. से स्तंभ लेखन भी किया। वे दैनिक 'अमर उजाला' के संपादकीय सलाहकार भी हैं।]
- कविता में यथार्थ को देखने और पहचानने का वीरेन डंगवाल का तरीका बहुत अलग, अनूठा और बुनियादी किस्म का है। सन् 1991 में प्रकाशित उनका पहला कविता संग्रह 'इसी दुनिया में आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण लगता है। उन्होंने कविता में समाज के साथ परण जनों और हाशिये पर स्थित जीवन के जो विलक्षण ब्यौरे और दृश्य रचे हैं, वे कविता में और कविता से बाहर भी बेचैन करने वाले हैं। उन्होंने कविता के मार्फत ऐसी बहुत-सी वस्तुओं और उपस्थितियों के विमर्श का संसार निर्मित किया है जो प्रायः ओझल और अनदेखी थीं। उनकी कविता में जनवादी परिवर्तन की मूल प्रतिज्ञा है और उसकी बुनावट में ठेठ देसी किस्म के, खास और आम, तत्सम और तन्द्भव, क्लासिक और देशज अनुभवों की संश्लिष्टता है।
- कविता में यथार्थ को देखने और पहचानने का वीरेन डंगवाल का तरीका बहुत अलग, अनूठा और बुनियादी किस्म का है। सन् 1991 में प्रकाशित उनका पहला कविता संग्रह 'इसी दुनिया में आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण लगता है। उन्होंने कविता में समाज के साथ परण जनों और हाशिये पर स्थित जीवन के जो विलक्षण ब्यौरे और दृश्य रचे हैं, वे कविता में और कविता से बाहर भी बेचैन करने वाले हैं। उन्होंने कविता के मार्फत ऐसी बहुत-सी वस्तुओं और उपस्थितियों के विमर्श का संसार निर्मित किया है जो प्रायः ओझल और अनदेखी थीं। उनकी कविता में जनवादी परिवर्तन की मूल प्रतिज्ञा है और उसकी

बुनावट में ठेठ देसी किस्म के, खास और आम, तत्सम और तन्द्भव, क्लासिक और देशज अनुभवों की संश्लिष्टता है।

- कविता में यथार्थ को देखने और पहचानने का वीरेन डंगवाल का तरीका बहुत अलग, अनूठा और बुनियादी किस्म का है। सन् 1991 में प्रकाशित उनका पहला कविता संग्रह 'इसी दुनिया में आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण लगता है। उन्होंने कविता में समाज के साथ परण जनों और हाशिये पर स्थित जीवन के जो विलक्षण ब्यौरे और दृश्य रचे हैं, वे कविता में और कविता से बाहर भी बेचैन करने वाले हैं। उन्होंने कविता के मार्फत ऐसी बहुत-सी वस्तुओं और उपस्थितियों के विमर्श का संसार निर्मित किया है जो प्रायः ओझल और अनदेखी थीं। उनकी कविता में जनवादी परिवर्तन की मूल प्रतिज्ञा है और उसकी बुनावट में ठेठ देसी किस्म के, खास और आम, तत्सम और तन्द्भव, क्लासिक और देशज अनुभवों की संश्लिष्टता है।
- कविता में यथार्थ को देखने और पहचानने का वीरेन डंगवाल का तरीका बहुत अलग, अनूठा और बुनियादी किस्म का है। सन् 1991 में प्रकाशित उनका पहला कविता संग्रह 'इसी दुनिया में आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण लगता है। उन्होंने कविता में समाज के साथ परण जनों और हाशिये पर स्थित जीवन के जो विलक्षण ब्यौरे और दृश्य रचे हैं, वे कविता में और कविता से बाहर भी बेचैन करने वाले हैं। उन्होंने कविता के मार्फत ऐसी बहुत-सी वस्तुओं और उपस्थितियों के विमर्श का संसार निर्मित किया है जो प्रायः ओझल और अनदेखी थीं। उनकी कविता में जनवादी परिवर्तन की मूल प्रतिज्ञा है और उसकी बुनावट में ठेठ देसी किस्म के, खास और आम, तत्सम और तन्द्भव, क्लासिक और देशज अनुभवों की संश्लिष्टता है।
- कविता में यथार्थ को देखने और पहचानने का वीरेन डंगवाल का तरीका बहुत अलग, अनूठा और बुनियादी किस्म का है। सन् 1991 में प्रकाशित उनका पहला कविता संग्रह 'इसी दुनिया में आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण लगता है। उन्होंने कविता में समाज के साथ परण जनों और हाशिये पर स्थित जीवन के जो विलक्षण ब्यौरे और दृश्य रचे हैं, वे कविता में और कविता से बाहर भी बेचैन करने वाले हैं। उन्होंने कविता के मार्फत ऐसी बहुत-सी वस्तुओं और उपस्थितियों के विमर्श का संसार निर्मित किया है जो प्रायः ओझल और अनदेखी थीं। उनकी कविता में जनवादी परिवर्तन की मूल प्रतिज्ञा है और उसकी बुनावट में ठेठ देसी किस्म के, खास और आम, तत्सम और तन्द्भव, क्लासिक और देशज अनुभवों की संश्लिष्टता है।
- कविता में यथार्थ को देखने और पहचानने का वीरेन डंगवाल का तरीका बहुत अलग, अनूठा और बुनियादी किस्म का है। सन् 1991 में प्रकाशित उनका पहला कविता संग्रह 'इसी दुनिया में आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण लगता है। उन्होंने कविता में समाज के साथ परण जनों और हाशिये पर स्थित जीवन के जो विलक्षण ब्यौरे और दृश्य रचे हैं, वे कविता में और कविता से बाहर भी बेचैन करने वाले हैं। उन्होंने कविता के मार्फत ऐसी बहुत-सी वस्तुओं और उपस्थितियों के विमर्श का संसार निर्मित किया है जो प्रायः ओझल और अनदेखी थीं। उनकी कविता में जनवादी परिवर्तन की मूल प्रतिज्ञा है और उसकी बुनावट में ठेठ देसी किस्म के, खास और आम, तत्सम और तन्द्भव, क्लासिक और देशज अनुभवों की संश्लिष्टता है।

- हमारी नींद Summary in Hindi पाठ का अर्थ नई कविता के यशस्वी कवि हिन्दी साहित्य में अपना अलग पहचान बनानेवाले वीरेन डंगवाल एक चर्चित कवि हैं। इनकी रचनाओं में यथार्थ का बहुत अलग, अनूठा और बुनियादी किस्म का वर्णन मिलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं ने समाज के साधरण जनों और हाशिये पर स्थित जीवन को विशेष रूप से स्थान दिया है। उनकी कविता में जनवादी परिवर्तन की मूल प्रतिज्ञा है और उसकी बनावट में ठेठ देशी किस्म के खास और आम, तत्सम और तद्भव, क्लासिक और देशज अनुभवों की संश्लिष्टता है।

कविता के साथ

प्रश्न 1. कविता के प्रथम अनुच्छेद में कवि एक बिप्य की रचना करता है। उसे स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कविता के प्रथम अनुच्छेद में कवि वीरेन डंगवाल ने मानव जीवन एक बिंब उपस्थित किया है। सुविधाभोगी आरामपसंद जीवन नींद रूपी अकर्मण्यता के चादर से अपने आपको ढंककर जब सो जाता है तब भी प्रकृति के वातावरण के एक छोटा बीज अपनी कर्मठता रूपी सींगों से धरती के सतह रूपी संकटों को तोड़ते हुए आगे बढ़ जाता है। यहाँ नींद, अंकुर, कोमल सींग, फूली हुई बीज, छत ये सभी बिम्ब रूप में उपस्थित है।

प्रश्न 2. मक्खी के जीवन-क्रम का कवि द्वारा उल्लेख किये जाने का क्या आशय है?

उत्तर- मक्खी के जीवन-क्रम का कवि द्वारा उल्लेख किये जाने का आशय है निम्न स्तरीय जीवन की संकीर्णता को दर्शाना। सष्टि में अनेक जीवन-क्रम चलता रहता है। उसका जीवन-क्रम की व्यापकता को लेकर कर्मठता और अकर्मठता का बोध कराता है लेकिन मक्खी के जीवन-क्रम केवल सुविधापयोगी एवं परजीवी-जीवन का बोध कराता है।

प्रश्न 3. कवि गरीब बस्तियों का क्यों उल्लेख करता है ?

उत्तर- कवि गरीब बस्तियों के उल्लेख के माध्यम से कहना चाहता है कि जहाँ के लोग दो जून रोटी के लिए काफी मसक्कत करने के बाद भी तरसते हैं वहाँ पूजा-पाठ, देवी जागरण जैसे महोत्सव कितना सार्थक हो सकता है ? यहाँ कुछ स्वार्थी लोग अपनी उल्लू सीधा करने के लिए गरीब लोगों का उपयोग करते हैं। लेकिन गरीबी से ग्रसित लोग अपने वास्तविक विकास हेतु सचेत नहीं होते हैं।

प्रश्न 4. कवि किन अत्याचारियों का और क्यों जिक्र करता है?

उत्तर- कवि यहाँ उन अत्याचारियों का जिक्र करता है जो हमारी सुविधाभोगी, आराम पसंद जीवन से लाभ उठाते हैं। समाज का एक वर्ग जो ऐशो-आराम की जिंदगी में अपने आपको ढाल लेता है उसी का लाभ अत्याचारी उठाते हैं। हमारी बेपरवाहियों के बाहर विपरीत परिस्थितियों से लगातार लड़ते हुए बढ़ते जाने वाले जीवन नहीं रह पाते हैं और इस अवस्था में अत्याचारी अत्याचार करने के बाह्य और आंतरिक सभी साधन जुटा लेते हैं।

प्रश्न 5. इनकार करना न भूलने वाले कौन हैं? कवि का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- आज भी हमारे समाज में कुछ ऐसे हठधर्मी हैं जो संवैधानिक और वैधानिक स्तर पर 'कई गलतियाँ कर जाते हैं लेकिन अपनी भूलें या गलतियों को स्वीकार नहीं करते हैं। वे साफ तौर पर अपनी भूल को इनकार कर देते हैं। जैसे लगता है कि उनका दलील काफी साफ और मजबूत है।

प्रश्न 6. कविता के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

उत्तर- किसी भी कविता का शीर्षक कवितारूपी शरीर का मुख होता है। शीर्षक कविता की सारगर्भिता लिए रहता है। शीर्षक रखने के समय कुछ बातें इस प्रकार होती हैं-शीर्षक, सार्थक लघु और समीचीन होना चाहिए। साथ ही शीर्षक घटना प्रधान, जीवन प्रधान या विषय-वस्तु प्रधान होता है। यहाँ शीर्षक विषय-वस्तु प्रधान हैं। शीर्षक छोटा है और आकर्षक भी है। इसका शीर्षक पूर्ण रूप से केन्द्र में चक्कर लगाता है जहाँ शीर्षक सुनकर ही जानने की इच्छा प्रकट हो जाता है। अतः सब मिलाकर शीर्षक सार्थक है।

प्रश्न 7. 'याने साधन तो सभी जुटा लिए हैं अत्याचारियों ने की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक हिन्दी साहित्य के हमारी नींद नामक शीर्षक से उधृत है। कवि वीरेन डंगवाल सामाजिक अत्याचारियों के करतूतों का पर्दाफाश किये हैं। आज हमारे समाज में अनेक लोग हैं जो अपनी जिंदगी को आरामतलबी बना लिये हैं। ऐसी जिंदगी समाज और राष्ट्र के लिए खतरनाक परिधि में रहती है और इन्हीं में से कुछ लोग ऐसे हैं जो इनकी विवशता का लाभ उठाने के लिए गलत अंजाम देने में पीछे नहीं हटते हैं। अत्याचारी आंतरिक और बाह्य रूप से अपने स्वार्थपूर्ति के लिए सभी प्रकार के साधन अपनाते हैं।

प्रश्न 8. व्याख्या करें-गरीब बस्तियों में भी धमाके से हुआ देवी जागरण लाउडस्पीकर पर।

उत्तर - प्रस्तुत पद्यांश हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि वीरेन डंगवाल के द्वारा लिखित 'हमारी नींद' से ली गई है। इस अंश में कवि उन लोगों का चित्र खींचा है जो गरीब बस्तियों में जाकर अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए देवी जागरण जैसे महोत्सव का आयोजन करते हैं। कवि कहते हैं कि आज भी हमारे समाज में कुछ ऐसे स्वार्थपरक लोग हैं जिनके हृदय में गरीबों के प्रति हमदर्दी नहीं है। केवल उनसे समय-समय पर झूठे वादे करते हैं। नेता, पूँजीपति एवं अत्याचारी ये सभी गरीबों की आंतरिक व्यथा से खिलवाड़ कर उनकी विवशता से लाभ उठाते हैं।

प्रश्न 9. "हमारी नींद के बावजूद' की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक के "हमारी नींद" नामक शीर्षक से उधृत है। इस अंश में हिन्दी काव्यधारा के समसामयिक कवि वीरेन डंगवाल ने वैसे लोगों का चित्रण किया है जो आरामतलबी जीवन पंसद करते हैं। प्रस्तुत अंश में कवि कहते हैं कि जीवन-क्रम कभी रुकता नहीं है। समय-चक्र के समान बिना किसी की प्रतीक्षा किये हुए अनवरत आगे ही बढ़ता जाता है। यदि हमारे समाज के कोई भी व्यक्ति सुविधोपयोगी आराम पसंद जीवन पसंद करते हैं तो भी कहीं एक पक्ष जरूर ऐसा होता है जिसका सिलसिला हमेशा आगे बढ़ते जाता है जो कर्मवाद का संदेश देता है।

प्रश्न 10. 'हमारी नींद' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर- समसामयिक कवि वीरेन डंगवाल ने हमारी नींद' कविता में विभिन्न चित्रों के माध्यम से सुविधाभोगी जीवन और हमारी बेपरवाही के बावजूद बेहतर जिन्दगी के लिए चलने वाले संघर्ष का चित्रण बड़ी स्पष्टता से किया है।

कवि कहता है कि छोटी धरती के नीचे बीज अंकुरा और उस छोटे अंकुर ने अपने ऊपर की धरती को दरकाया और खुली हवा में उसने साँस ली। उसने अपने ऊपर के अवरोध को तोड़ा। पेड़ ने भी अपना कद ऊँचा किया। प्रकृति के इस क्रम के बाद कवि समाज की ओर निहारता है।

मक्खियों की तरह लोग जी रहे हैं और उनकी तरह ही बच्चे उत्पन्न कर रहे हैं। नतीजा है कि जीवन की इस अफरा-तफरी में ही रंगे हो रहे कुछ लोग आगजनी कर रहे हैं, बम फोड़ रहे हैं ताकि अपने लिए सुविधा का सामान जुटा सकें। कुछ की जिन्दगी जाती है तो जाए।

हमें क्या ? दूसरी ओर कुछ गरीब लोग हैं जो अपनी गरीबी को अपना नसीब मान चुके हैं, वे गरीबी से छुटकारा पाने के लिए लड़ने की अपेक्षा अपनी गाढ़ी कमाई में लाउडस्पीकर लगाकर, रात-रात भर देवी के भजन गा रहे हैं वे इस भ्रम में हैं कि देवी-पूजा से उनका जीवन बदल जाएगा।

वस्तुतः वे नींद में हैं। दरअसल भाग्य, पूजा-पाठ समाज के दुश्मनों के बिछाए हुए जाल हैं ताकि ये अत्याचारी आनन्द-सुख भोग सकें। किन्तु जीवन ऐसा है कि उनके लाख चाहने के बाद रुकता नहीं है। उपेक्षाकृत से उस पर कोई असर नहीं पड़ता।

कवि कहता है कि लाख कोशिशों के बावजूद कुछ लोग हैं जो अनाचार के आगे सिर नहीं झुकाते। वे दृढतापूर्वक अनुचित कार्य करने से मना कर देते हैं। उनकी ओर से आँख बन्द कर लेने पर भी वे रुकते नहीं, बढ़ते जाते हैं। यह संघर्ष ही उनकी ताकत है, मानव के विकास की यही कहानी है।

प्रश्न 11. कविता में एक शब्द भी ऐसा नहीं है जिसका अर्थ जानने की कोशिश करनी पड़े। यह कविता की भाषा की शक्ति है या सीमा ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- यह भाषा की शक्ति है जो अपने साधारण अर्थ से सबकुछ समझाने में सफल हो जाती है। सीमा का रूपान्तर नहीं होता है किन्तु भाषा का रूपान्तर कविता की सौष्ठवता को प्रदर्शित करने में समर्थ हो जाती है।

9. हमारी नींद

1. 'हमारी नींद' कविता के कवि हैं-

(A) कुँवर नारायण

(B) वीरेन डंगवाल

(C) अनामिका

(D) रेनर मारिया रिल्के

ANS – (B)

2. वीरेन डंगवाल द्वारा रचित कविता है—

(A) हिरोशिमा

(B) हमारी नींद

(C) अक्षर ज्ञान

(D) लौटकर आऊँगा फिर

ANS – (B)

3. वीरेन डंगवाल का जन्म कब हुआ था?

(A) 19 सितम्बर, 1927 ई०

(B) 17 अगस्त, 1961 ई०

(C) 7 मार्च, 1911 ई०

(D) 5 अगस्त, 1947 ई०

ANS – (D)

4. वीरेन डंगवाल कवि हैं-

(A) छायावादी

(B) प्रगतिवादी

(C) प्रयोगवादी

(D) समकालीन

ANS – (D)

5. 'हमारी नींद' कविता कहाँ से ली गयी है?

(A) इसी दुनिया में से

(B) पहल पुस्तिका से

(C) दुष्चक्र में स्रष्टा से

(D) असादीवार से

ANS – (C)

6. कवि के अनुसार, धमाके के साथ देवी जागरण कहाँ हुआ?

(A) मंदिरों में

(B) नदी तट पर

(C) गरीब बस्तियों में

(D) इनमें से कोई नहीं

ANS – (C)

7. गरीब बस्तियों में क्या हुआ?

(A) कई शिशु पैदा हुए

(B) दंगे, आगजनी और बमबारी

(C) धमाके से देवी जागरण

(D) इनमें से कोई नहीं

ANS – (C)

8. मेरी नींद के दौरान कुछ पेड़। बढ़ गए

(A) अधिक

(B) इंच

(C) वृक्ष

(D) सेंटीमीटर

ANS – (B)

9. 'अमृत प्रभात' पत्रिका कहाँ से प्रकाशित होती है?

(A) लखनऊ

(B) बनारस

(C) इलाहाबाद

(D) मेरठ

ANS – (C)

10. हमारी नींद कविता में किसके जीवन-क्रम पूरा होने की बात की गई है?

(A) मानव

(B) मक्खी

(C) पशु

(D) पक्षी

ANS – (B)

11. वीरेन डंगवाल को किस काव्य संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था?

(A) दुष्चक्र में स्रष्टा

(B) इसी दुनिया में

(C) पहल पुस्तिका

(D) अमर उजाला

ANS – (A)

12. सुविधाभोगी आराम पंसद जीवन अथवा हमारी वेपरवाहियों के बाहर विपरीत परिस्थितियों से लगातार लड़ते हुए बढ़ते जानेवाले जीवन का चित्र किस कविता में हुआ है?

(A) स्वदेशी

(B) भारतमाता

(C) हमारी नींद

(D) जनतंत्र का जन्म

ANS – (C)

13. दैनिक 'अमर उजाला' के संपादकीय सलाहकार भी है-

(A) वीरेन डंगवाल

(B) कुँवर नारायण

(C) अनामिका

(D) जीवनानंद दास

ANS – (A)

14. कवि के अनुसार, इनकार करना न भूलने वाले कौन हैं?

(A) शिक्षित लोग

(B) किसान लोग

(C) हठधर्मी लोग

(D) इनमें से कोई नहीं

ANS – (C)

15. वीरेन डंगवाल का पहला कविता संग्रह है-

(A) दुष्चक्र में स्रष्टा

(B) इसी दुनिया में

(C) देशांतर

(D) भग्नदूत

ANS – (B)

16. वीरेन डंगवाल का पहला काव्य संग्रह कब प्रकाशित हुआ?

(A) 1990 ई० में

(B) 1991 ई० में

(C) 1992 ई० में

(D) 1993 ई० में

ANS – (B)

17. गरीब बस्तियों में भी धमाके से हुआ देवी जागरण लाउडस्पीकर पर । प्रस्तुत पंक्ति किस कविता की है?

(A) हिरोशिमा

(B) एक वृक्ष की

(C) हमारी नींद

(D) अक्षर ज्ञान

ANS – (C)

18. समकालीन कवि हैं—-

(A) गुरुनानक

(B) प्रेमघन

(C) सुमित्रानंदन पंत

(D) हमारी नींद

ANS – (D)

19. किस रचना के लिए वीरेन डंगवाल को सहाय स्मृति पुरस्कार मिला था?

(A) दुष्चक्र में भ्रष्य

(B) इसी दुनिया

(C) घूमता आईना

(D) अमृत प्रभात

ANS – (B)

20. 'दुष्चक्र में स्रष्टा' काव्य संग्रह किस कवि क

(A) कुँवर नारायण

(B) अनामिका

(C) वीरेन डंगवाल

(D) जीवनानंद दास

ANS – (C)

21. तुर्की के महाकवि थे

(A) नाजिम हिकमत

(B) अब्दुल मुगनी

(C) सैयद मेहाल अहसन

(D) मो० सल्लाउद्दीन

ANS – (A)

22. 'हमारी नींद' शीर्षक कविता में नींद प्रतीक है?

(A) साहस

(B) उम्मीद

(C) प्रसन्नता

(D) आलस

ANS – (D)